नैतिकता भारतीय संस्कृति का आधार एवं आवश्यकता

नैतिकता ऐसे मापदण्ड है जो व्यक्ति के ऐच्छिक कर्मों, व्यवहार, दृष्टिकोणों का मूल्यांकन करते हैं। नैतिकता एवं समाज अंतर्संबंधित है, क्यों कि यदि कोई व्यक्ति वन मे रहे और चाहे वह जैसे भी कर्म करे, उसके कर्मों की परीक्षा नैतिकता के आधार पर हम नहीं कर सकते क्यों कि उसके कर्म अन्य किसी व्यक्ति को प्रभावित नहीं करते।

भारतीय संस्कृति मे नैतिकता के कुछ मूल तत्व है जैसे- सत्य, अहिंसा, परोपकार, दान, दया इत्यादि।

आदिकाल की बात करें तो श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया क्यो कि उनके कार्य नैतिकता के मापदण्ड को संतुलित करते रहे। न केवल उन्होंने नैतिकता की स्थापना की, ऐसे प्रतिमानो की स्थापना की जिन्हे समस्त विश्व अनुसरण करता है। वही महाभारत की द्युत क्रीड़ा के प्रसंग मे जिस तरह से नैतिकता का उलंघन हुआ व परिणाम समस्त आर्यावर्त ने भोगा। गीता के उपदेश इन्ही नैतिकता की स्थापना हेतु निर्देश देते है-

MGICS To Create a better Nation
महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट For Civil Services
G-13, Veda Business Park, Indore | 0731-4955044
132, M.P. Nagar, Bhopal | Ph. 0755-4298457
.com/mgics /mgicsindoreofficial https://www.youtube.com/mahatmagandhiinstitute...

मुख्य परीक्षा
म.प्र. राज्य लोक सेवा आयोग

प्रश्न संख्या

श्रीकृष्ण स्वयं कहते है "यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानं अधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम॥"

यहाँ धर्म का तात्पर्य नैतिकता से है एवं अधर्म का अनीति से। अन्य एक पंक्ति मे कहते है

"परित्राणाय साधुनां, विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे-युगे।"

अर्थात धर्म (नैतिकता) की स्थापना हेतु मैं (कृष्ण) बार-बार जन्म लेता हूँ।

बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग भी नैतिकता की स्थापना का ही मार्ग है। ये मार्ग अनीति (दुःख) रूपी दुष्परिणाम का शमन करते है।

इसके अतिरिक्त जैन दर्शन भी पंचमहाव्रत की अवधारणा देता है जिनमे सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य के संदेश निहित है आखिर नैतिकता ही के तत्व है।

इन कालक्रमों के चक्र को जैसे-जैसे गति मिलती है तो जन्म होता है - अशोक के धम्म का।
आखिर अशोक का धम्म क्या था? अशोक का धम्म ऐसी नीतियाँ थी जो पंचमहाव्रतो, अष्टांगिक मार्ग एवं सनातन धर्म की विशिष्टताओं का संयोजन थी। जिनका एकमात्र उद्देश्य नैतिकता की स्थापना करना ही था।

मध्यकाल के दौर में अकबर की गणना महान शासकों में हुई। उसने ऐसा क्या किया? जो अन्य शासक न कर सके। उत्तर है नैतिकता का चयन। उसने धार्मिक कट्टरता पर नियंत्रण स्थापित किया, सर्व धर्म समभाव एवं सुलहे कुल की नीति का प्रतिपादन किया। दीन-ए-इलाही के रूप में नैतिकता के आदर्श स्थापित किए और लोकप्रियता अर्जित की।

आधुनिक काल जागरण का युग रहा। अनेक सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन हुए जिनका उद्देश्य धार्मिक कुरीतियों सामाजिक विभेदों का अंत कर नैतिकता से युक्त समाज व राष्ट्र की स्थापना करना रहा।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा
म.प्र. राज्य लोक सेवा आयोग

हमारे संविधान निर्माताओं ने ऐसे संविधान को आकार दिया जो विभेदों, अनीतियों से परे सामाजिक आर्थिक राजनैतिक नैतिकता की स्थापना करता है।

अब प्रश्न उठता है कि नैतिकता की आवश्यकता क्यों है? इसका उत्तर यह है कि एक सभ्य सुन्दर, समानतापरक, समृद्ध राष्ट्र हेतु नैतिकता आधारभूत सिद्ध हो सकता है।

आदर्श राजनीति हेतु यह जरूरी है कि राजनेताओं द्वारा राजनीतिक मूल्यों का पालन किया जाए तथा व्यक्तिगत हितों की उपेक्षा करते हुए सार्वजनिक हित को लक्ष्य बनाकर जनकल्याणकारी राजनीति का चयन किया जाए। इसहेतु राजनीतिक नैतिकता जरूरी है।

ठीक उसी प्रकार संवेदनशील ईमानदार वस्तुनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ प्रशासन हेतु प्रशासकों के कार्य नैतिकता की तुला पर संतुलित होने चाहिए। इसी उद्देश्य से लोक सेवक आचरण-संहिता की स्थापना की गई।

राजनीति एवं प्रशासन के अतिरिक्त समाज भी राज्य का एक अंग है जो बनता है परिवारों एवं लोगों, उनके परस्पर अंतः क्रियाओं से।"
एक समतामूलक, सभ्य समाज हेतु पारिवारिक स्तर पर नैतिकता की स्थापना जरूरी है।

इसके अलावा आर्थिक - उपनिवेशवाद, एकाधिकार गोलबंदी, अनैतिक व्यापार प्रथाओं (मिलावट) की समाप्ति हेतु भी आर्थिक नैतिकता का होना जरूरी है। सरकार ने इसी उद्देश्य से प्रतिस्पर्धा अधि० 2002 का निर्माण किया है।

अब प्रश्न यह उठता है कि नैतिकता की स्थापना कैसे की जाए? पूर्व उदाहरणों से स्पष्ट हो चुका है कि भारतीय संस्कृति में नैतिकता का प्रभाव अपरिहार्य है। समय-समय पर नैतिकता स्थापना के प्रयास तत्कालीन शासकों एवं वर्तमान सामाजिक धार्मिक सुधारकों द्वारा किए गए।

नैतिकता स्थापना हेतु सबसे पहला प्रयास पारिवारिक स्तर पर किया जा सकता है क्योंकि परिवार ही प्रथम पाठशाला है जो बालक के चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

MGICS To Create a better Nation

द्वितीय है 'साहचर्य' अर्थात संगति। कहा गया है "जैसी संगति वैसी मानसिकता"। इस प्रकार यदि व्यक्ति नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण व्यक्ति का साहचर्य करता है तो उसमे नैतिकता का विकास होगा है।

इसके अलावा ऐसी शिक्षापद्धति का विकास हो जो नवनिहालो मे नैतिकता की स्थापना करे। ऐसी ही शिक्षा की कल्पना महात्मा गांधी बुनियादी शिक्षा के रूप मे करते है।

नैतिकता का महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह तब ज्यादा प्रभावशील होती है जब लोग स्वेच्छा से इसका चयन करे न कि बाह्य विधियां नियम या प्रचार ऐसा करने का दबाव डालें। हाँ संस्थाओ से जुड़े व्यक्तियो तथा देश के नागरिको के ऊपर विशेष परिस्थितियो मे बाह्य साधनो के द्वारा (कानून) नैतिकता का दबाव तैयार करते है।

पर क्या नैतिकता की स्थापना इतनी सरलता से हो सकती थी? या फिर नैतिकता यथार्थ मे अपनाना कितना सुसाध्य है? इस पर चर्चा करना जरूरी है।

नैतिकता के मूलभूत तत्वों के माध्यम से ही नैतिकता की स्थापना होती है। इस हेतु साधन-साध्य का सिद्धान्त लागू होता है।

उदाहरण के लिए-

यदि हम सत्य पर अडिग रहना चाहते हैं या फिर अहिंसा पर अडिग रहना चाहते हैं तो यह पथ सरल नहीं है क्योंकि ये तत्व कई बार जोखिम व दुविधा पैदा करते हैं। ये जोखिम आपके जीवन व आजीविका पर हो सकता है। वहीं उत्पन्न दुविधाएं आपके पारिवारिक व सामाजिक संबंध खराब कर सकती है।

इन बातों को हम हरिश्चन्द्र के उदाहरण से समझ सकते हैं। परोपकार हेतु अपने अंगों का एक-एक करके समाह-दान देने वाले ऋषि दधीचि के द्वारा समझ सकते हैं।

नैतिकता की ही स्थापना हेतु श्रीराम को स्वयं अनेकानेक कष्टों का सामना करना पड़ा। यही दशा जीसस क्राइस्ट की भी हुई।

पर क्या नैतिकता की स्थापना दुःसाध्य है?

MGICS To Create a better Nation

~~नहीं?~~

नहीं। महात्मा गांधी के अनुसार नैतिकता ही या कोरि लक्ष्य हो जैसा साधन वैसा ही साध्य प्राप्त होता है। अर्थात नैतिकता द्वारा ही नैतिकता की स्थापना होती है। समस्त चुनौतियों के बाद भी, नैतिकता का प्रादुर्भाव एक स्वस्थ्य, सभ्य, सुरक्षित एवं समानता परक समाज एवं राष्ट्र हेतु जरूरी है।

संक्षेप में भारतीय संस्कृति नैतिकता की पर्याय प्रारम्भ से ही रही है तथा ~~स्व~~ पीढ़ी दर पीढ़ी यह विविध आयामों के साथ बढ़ती रहती रही है। नैतिकता के मूलभूत तत्व ही वे आधार-स्तम्भ है जो भारतीय संस्कृति की निरंतरता को चिरस्थायी बना कर रखे हुए है। नैतिकता का पालन चुनौतीपूर्ण है, किन्तु दुःसाध्य नहीं है, एवं देश-समाज हेतु आवश्यक है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा

म.प्र. राज्य लोक सेवा आयोग

हाशिए में न लिखे

8

गांधीजी का स्वच्छ भारत

पूना समझौते के पश्चात, गांधीजी राजनैतिक गतिविधियों से दूर हो गए। इसके बाद उनकी समस्त गतिविधियाँ ग्रामीण एवं सामाजिक उत्थान के कार्यों को लक्षित करते हुए रही। इस दौरान ही उन्होने सर्वोदय की विचारधारा का सृजन किया। यह विचारधारा वर्ग-जाति-विहीनता आर्थिक विषमता से परे समस्त तबगो के कल्याण का आह्वान करता था।

ग्रामीण स्वच्छता भी सर्वोदय अवधारणा का ही भाग था। तत्कालीन परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी थी कि भारतीय संस्कृति जो स्वच्छता को एक त्योहार की तरह मनाती आ रही थी, ग्रामीण परिवेशों मे सामान्य स्वच्छ आदतों का आभाव हो चला था। इसी स्वच्छता की कमी के का कारण यह हुआ कि भारत मे संक्रामक रोगों की वजह से लाखों लोग मारे गए।

इन्ही समस्याओ को ध्यान रखते हुए उन्होने ग्राम-ग्राम जा कर स्वच्छता को ले कर लोगों को जागरूक किया एवं सामान्य स्वस्थ आदतों को अपनाने पर जोर दिया

इन्ही गांधीवादी प्रयासो को मूर्त रूप देने के क्रम मे 2012 मे निर्मल भारत अभियान जिसे नवनिर्मित भा.ज.पा सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान के नाम से प्रारम्भ किया।

गौरतलब है कि इस अभियान का लोगो 'महात्मागांधी' ही है। इस अभियान मे समस्त ग्राम शहरो को शामिल कर 2019 तक भारत को खुले मे शौच से मुक्त बनाने का संकल्प रखा गया था। इसी प्रयोजन से ग्राम-ग्राम तक शौचालय निर्माण कार्य संपन्न किए गए। इसके कारण अनेक ग्राम व शहर निर्मल घोषित किए जा चुके है। नगरीय अपशिष्टो की डोर-टू-डोर संग्रहण करके उनका उचित निपटान किया जा रहा है।

इन्दौर ने स्वच्छता रैंकिंग मे लगातार तीन वर्षो से सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग बना कर विदेशो के लिए भी रोल माडल बना है।

हलांकि इस कार्यक्रम मे मुख्य चुनौतियाँ ग्राम स्तर पर रोजगार सहायकों के भ्रष्टाचार के कारण, ग्रामीणो को पूर्ण राशि न मिल पाना, जलापूर्ति, पूर्ण प्रसार का अभाव है

किन्तु सरकार की इस योजना ने अन्य सभी पहलों से ज्यादा ग्रामीण स्वच्छता का प्रसार किया है। स्वच्छ भारत हेतु जो गांधीजी के प्रयास रहे उन्हें सार्थक करने में मौजूदा शासन, नागरिकों एवं प्रशासन की भूमिका अहम रही है। आने वाले समय में तीनों के समन्वित प्रयासों के द्वारा समस्त बाधाओं को समाप्त करते हुए निश्चित ही गांधीजी के स्वच्छ भारत की स्थापना की जा सकेगी।

MGICS
To Create a better Nation

3

मीडिया

मीडिया शब्द 'मीडियम' से लिया गया है, जिसका अभिप्राय है 'माध्यम'। सामान्य शब्दों में मीडिया एक संचार का माध्यम है जो सूचनाओं का एक स्थान से अन्यत्र सार्वजनीकरण करता है।

यह प्रिंटेड, सोशल, ब्राडकास्ट, इन्टरनेट मीडिया हो सकती है।

मीडिया का भारत मे विकास 18वीं शताब्दी मे हुआ। उस दौरान समाचारपत्रों के माध्यम से सूचनाएं स्थानांतरित होती रहीं। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार मीडिया ने राष्ट्रवादी ताकतों का समर्थन किया तथा आंदोलन को व्यापक बनाया। इसीलिए मीडिया पर प्रतिबंध लगाए गए। लार्ड लिटन ने रेग्यूलेटिंग एक्ट का निर्माण कराया ताकि मीडिया पर नियंत्रण रखा जा सके।

एक लोकतांत्रिक राष्ट्र मे मीडिया उसका चौथा स्तम्भ है। जब तीन स्तम्भ कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका असफल हो तो, मीडिया ही जनता को जनांदोलन में

बदल देती है और इसका उदाहरण हम अन्नाआन्दोलन मे देख सकते है।

वास्तव मे मीडिया के होने का औचित्य क्या है? यह हम अग्रलिखित बिन्दुओ पर स्पष्ट करते है।

मीडिया सरकार व जनता के मध्य संवाद हेतु, जनसमस्या को सरकार तक पहुँचाने हेतु, भ्रष्टाचार व अनैतिक गतिविधियों के सार्वजनीकरण, वैश्विक घटनाओं की जानकारी पारदर्शिता हेतु अहम भूमिका का निर्वाह करता है। इसके अलावा मनोरंजन एवं जागरूकता तथा एडवर्टाइसमेंट हेतु भी इसका प्रयोग वर्तमान दौर मे प्रमुख रूप से किया जाता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मीडिया निष्पक्ष है? अगर है तो इसकी समस्याए क्या है? इसका उत्तर है- वर्तमान के कुछ हालातों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मीडिया व्यापारिक कम्पनियों की तरह लाभ के सिद्धान्त को ध्यान रखते हुए मुख्य मुद्दों से परे पेड न्यूज पर ध्यान देती है। उनका सारा ध्यान टी.आर.पी प्राप्त करने पर रहता है। हलांकि मौजूदा सभी मीडिया चैनलों पर ऐसा आरोप लगाना सही नहीं होगा।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा

म.प्र. राज्य लोक सेवा आयोग

किन्तु निष्पक्ष रहने वाले पत्रकारों को अक्सर ही अपनी जान एवं आजीविका खोने, सरकारी तंत्र द्वारा प्रताड़ित किये जाने का भय होता है।

तो ऐसे में यह जरूरी है कि मीडिया-कर्मी लाभ की जगह सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखते हुए निष्पक्षता से ही अपने कार्य संपादित करें।

सरकार को भी चाहिए की मीडियाकर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें तथा सोशल मीडिया की फेक न्यूज प्रसारित कर सामाजिक-धार्मिक सद्भाव को बिगाड़ने वाले तत्वों पर कार्यवाही करें।

निष्कर्षत: मीडिया लोकतंत्र की रक्षा करने वाला बहुआयामी तंत्र है जिसे अपनी सीमाओं को ध्यान मे रखते हुए निष्पक्षता से अपने कार्यों का संपादन करना चाहिए।